Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन

डॉ. रश्मि शर्मा* पवन कुमार सोपरा**

* प्राचार्य, राष्ट्र भारती शिक्षा महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र) सतत् शिक्षा अध्ययनशाला,सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन किया गया है। शोध शिक्षकों की व्यवसाय के प्रति पूर्ण समर्पण भावना एवं अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा को व्यवसाय में समर्पित कर देने की तत्परता ही व्यावसायिक प्रतिबद्धता कहलाती है। प्रतिबद्ध व्यक्ति अपना कार्य करके संतोष का अनुभव करते है। यह अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इसमें मुख्य चर व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं जननांकीय चर विद्यालय के प्रकार, लिंग (महिला एवं पुरूष शिक्षक) संकाय(कला और विज्ञान) शोध का सीमांकन मंदसौर, नीमच, रतलाम एवं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों तक सीमित रखा है। शोध उपकरण में मानकीकृत उपकरण डॉ. रविन्दर कौर, डॉ. सरबजीत कौर 'रानू' एवं श्रीमती सरबजीत कौर 'बरार' का उपकरण 600 महिला पुरूष शिक्षकों के न्यादर्श पर किया गया है। शोध में सांख्यिकीय प्रविधि प्रतिशत,माध्य/मध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण सहसंबंध से शोध परिणाम प्राप्त किये है। विद्यालय, लिंग, संकाय के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों मे सार्थक अंतर हैं, परंतु यह सार्थक अंतर नहीं है, अत: अधिकांश शिक्षक/ शिक्षिकाओं की व्यावसायिक प्रतिबद्धता उनके कार्य के प्रति सजगता दर्शाती हैं । तथा कुछ शिक्षक/शिक्षिका अपने कार्य के प्रति सजग नहीं है, अत: कार्य कौशल को उत्साह पूर्ण बनाकर प्रतिबद्धता में सजगता को बढ़ाया जा सकता है।

प्रस्तावना – शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यवहार में लाता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य निरंतर सीखता रहता है। सीखने की इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप उसे अनुभव प्राप्त होता है। इन अनुभवों को व्यवहार में लाने का कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा मनुष्य व समाज का दर्पण है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करता है और शिक्षा सभ्यता के रूप में इस संसार की उन्नति करने में सहायता करती है।

शिक्षा के मुख्य स्तर है– प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च व उच्चतर शिक्षा है। शिक्षा में इन सभी स्तरों का विशेष स्थान है। शिक्षा का प्रथम पायदान प्राथमिक स्तर व द्वितीय पायदान उच्च प्राथमिक स्तर है। बालक प्राथमिक स्तर पर आधारभूत ज्ञान प्राप्त करके उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश करता है। शिक्षा एक विकासशील प्रक्रिया है जो अनवरत एवं हर जगह चलती है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक कुछ ना कुछ अवश्य सीखता है। इस प्रकार शिक्षा परस्पर सीखने–सिखाने की सतत् एवं अनवरत प्रक्रिया है एवं इसका मुख्य उद्देश्य जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षा कोई पदार्थ नहीं है एवं शिक्षा स्थिर भी नहीं यह एक गतिशील प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की कुंजी है। शिक्षा के प्रकाश से व्यक्ति के सभी प्रकार के संदेह दूर हो जाते हैं । शिक्षा व्यक्ति की बुद्धि विवेक और कुशलता में वृद्धि करती है तथा जीवन को समझने की क्षमता प्रदान करती है।

यह अनुभव किया जा रहा है कि अगर शिक्षक में व्यवसायिक योग्यता है एवं वह प्रतिबद्ध है तथा उसे शैक्षिक संस्थान और समाज में कार्य करने की शक्ति एवं आज्ञा प्रदान की जाती है तो एक ऐसी श्रृंखलाबद्ध प्रक्रिया प्रारम्भ की जा सकती है जिसके द्वारा अधिक से अधिक विद्यार्थियों के विकास में उच्च कोटि का अधिगम बहुत ही प्रभावशाली ढंग से देखा जा सकता है इस प्रकार शिक्षा के गुणात्मक उन्नयन में शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षकों की प्रतिबद्धता एक अलग प्रकार की होती है यद्यपि वह एक व्यावसायिक व्यक्ति होता है किन्तु डाक्टरों एवं वकीलों की भांति वह स्वतन्त्र परिस्थितियों में कार्य नहीं कर सकता अपनी कक्षा में स्वामित्व तथा उस पर पूर्ण नियंत्रण होते हुए भी उसे आस–पास के वातावरण एवं सम्पूर्ण समाज पर निर्भर होना पड़ता है। इसलिए उसमें धर्मात्मा की लगन, अभिभावक की चिन्ता एवं एक सुधारक का समर्पण आवश्यक है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर ज्ञात करना।
2. विद्यालय के प्रकार के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
3. लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।
4. संकाय के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन करना।

परिकल्पना–प्रस्तुत शोध हेतु शुन्यपरिकल्पनाओं का निर्माण किया गया

1. विद्यालय के प्रकार के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय

के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. लिंग के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. संकाय के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन के चर

मुख्य चर –व्यावसायिक प्रतिबद्धता

जननांकीय चर

1. विद्यालय के प्रकार (शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षक)
2. लिंग (महिला एवं पुरूष शिक्षक)
3. संकाय (कला और विज्ञान)

शोध सीमांकन:

1. प्रस्तुत शोध कार्य कों मध्यप्रदेश के रतलाम, मंदसौर एवं नीमच जिले तक सीमित रखा गया।
2. प्रस्तुत शोध कार्य केवल माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों तक सीमित रखा गया।
3. शोध कों शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित रखा गया।
4. प्रस्तुत शोध कों कला एवं विज्ञान संकाय के शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया।
5. प्रस्तुत शोध महिला शिक्षक एवं पुरूष शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया।

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

शोध उपकरण – प्रयुक्त शोध में व्यावसायिक प्रतिबद्धता के मापन हेतु मानकीकृत उपकरण को लिया गया है जो निम्न है

01	**व्यावसायिक प्रतिबद्धता**	डॉ0 रविन्दर कौर, डॉ0 सरबजीत कौर 'रानू' एवं श्रीमती सरवजीत कौर 'बरार'	प्रामाणिक

शोध जनसंख्या – मंदसौर जिले के लगभग 85 शासकीय विद्यालय एवं 99 अशासकीय विद्यालय, रतलाम जिले के लगभग 92 शासकीय विद्यालय एवं 92 अशासकीय विद्यालय एवं नीमच जिले के लगभग 68 शासकीय विद्यालय एवं 61 अशासकीय विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में लिया गया। इनमें अध्यापनरत उच्चतर माध्यमिक स्तर के महिला एवं पुरूष शिक्षकों को लिया गया। इनको भी लिंगगत भिन्नता के आधार पर दो वर्गों–पुरूष शिक्षक एवं महिला शिक्षक के रूप में वर्गीकृत किया गया एवं संकाय के आधार पर दो वर्गो कला एवं विज्ञान के रूप में वर्गीकृत किया गया।

शोध न्यादर्श – प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण शोध है। प्रस्तुत अनुसंधान समस्या के शोध के लिए रतलाम, मंदसौर एवं नीमच जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया।

प्रत्येक जिले से 10 शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय एवं 10 अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। प्रत्येक विद्यालय से 05 महिला शिक्षक एवं 05 पुरूष शिक्षकों को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया। इस प्रकार कुल 600 (प्रत्येक जिले से 200– 200–200) शिक्षकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियां– प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्राप्त प्रदत्तों का सारणीयन कर निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधि का उपयोग किया गया।

1. प्रतिशत 2. माध्य/ मध्यमान 3. मानक विचलन
4. टी–परीक्षण 5. सहसंबंध (Corelation)

शोध परिणाम – इस शोध में सांख्यिकीय विधि,प्रतिशत,माध्य/ मध्यमान,मानक विचलन,टी– परीक्षण एवं सहसंबध का उपयोग कर परिणामों को प्राप्त किया गया है जो इस प्रकार है–

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का स्तर पर अध्ययन करने पर यह ज्ञात हुआ कि शिक्षक शिक्षिकाओं की राय के अनुसार अधिकांश 63 प्रतिशत शिक्षक शिक्षिकाओं की व्यावसायिक प्रतिबद्धता उच्च पाई गई 35 प्रतिशत की मध्यम तथा 02 प्रतिशत शिक्षक /शिक्षिकाओं की व्यावसायिक प्रतिबद्धता निम्न पाई गई।

परिकल्पना के आधार पर :

1. विद्यालय के प्रकार के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं। निरस्त की जाती है, की जाँच में अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक है। दोनो में सार्थक अंतर है, परंतु यह अतंर सार्थक नहीं है। अत: यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

2. लिंग (पुरूष/ महिला) के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं। निरस्त की जाती है, की जाँच में अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक है। दोनो में सार्थक अंतर है, परंतु यह अतंर सार्थक नहीं है। अत: यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

3. संकाय के आधार पर उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं। निरस्त की जाती है, की जाँच में अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता का मध्यमान शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक है। दोनो में सार्थक अंतर है, परंतु यह अतंर सार्थक नहीं है। अत: यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

अध्यापक व्यावसायिक प्रतिबद्धता को पांच भागों में विभक्त किया गया

(अ) अधिगमकर्ता के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता :

1. सकारात्मक दृष्टीकोंण :–विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टीकोण विकसित करने के प्रयास पर 48 प्रतिशत शिक्षक 'पूर्णत: सहमत',22 प्रतिशत 'सहमत', 01 प्रतिशत 'अनिश्चित', 09 प्रतिशत 'असहमत', एवं 20 प्रतिशत 'पूर्णत: असहमत', पाए गए। अत: अधिकांश(48 प्रतिशत) शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की राय 'पूर्णत: सहमत' के पक्ष में पाई गई। अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की राय में समानता पाई गई।

2. विद्यार्थियों की अनुपस्थिति :–शिक्षण को रूचिकर बनाकर अनुपस्थिति की समस्या को हल करने पर 69 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ 'पूर्णत: सहमत', और 21 प्रतिशत 'सहमत' एवं इसके विपरित 03 प्रतिशत 'अनिश्चत' ,10 प्रतिशत 'असहमत', और 07 प्रतिशत 'पूर्णत असहमत' रहे।

3. **समान ध्यान देना :** सभी विद्यार्थियों पर समान ध्यान देना असंभव है के कथन पर 51 प्रतिशत शिक्षक एव शिक्षिकाएँ 'पूर्णत: सहमत' और 21 प्रतिशत 'सहमत', जबकि 11 प्रतिशत 'असहमत' और 09 प्रतिशत 'पूर्णत: असहमत' पाए गए।

4. **मनोवैज्ञानिक समस्याएँ :** विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समस्याओं से सरोकार न होने के नकारात्मक कथन पर 38 प्रतिशत शिक्षक एव शिक्षिकाएँ 'पूर्णत: सहमत' और 19 प्रतिशत ने 'सहमत' एवं वही 12 प्रतिशत 'असहमत' और 25 प्रतिशत 'पूर्णत: असहमत' थे।

5. **सर्वांगीण कथन :** विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए कर्तव्य-बद्ध होने पर 78 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ 'पूर्णत: सहमत'और 34 प्रतिशत 'असहमत' पाए गए, जो कि शिक्षकों की भारी निष्ठा को दर्शाता है।

6. **प्रखर विद्यार्थियों पर ध्यान :** प्रखर विद्यार्थियों पर सबसे कम ध्यान देने की बात पर 42 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ 'पूर्णत: सहमत' और 34 प्रतिशत 'सहमत' पाए गए।

7. **शिक्षण पूर्व नियोजन :** पूर्व तैयारी की आवश्यकता न होने की बात पर 40 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ 'पूर्णत: सहमत' और 20 प्रतिशत 'सहमत' पाए गए।

8. **गृह कार्य और योग्यता :**गृह कार्य देते समय योग्यताओं पर ध्यान न देने के संदर्भ में अधिकांश 35 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाएँ 'असहमत' पाए गए।

9. **विद्यार्थियों को अनदेखा करना :** उत्तर ने दे पाने पर विद्यार्थी को अनदेखा करने के कथन से अधिकांश 52 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं द्वारा 'असहमती' प्रदान की गई।

(ब) समाज के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता :

1. **अच्छे नागरिक निर्माण : '**विद्यार्थियों अच्छे नागरिक तभी बन सकते है जब अध्यापक अच्छे हो' इस कथन पर शिक्षक एव शिक्षिकाओं की 89 प्रतिशत 'पूर्णत: सहमती' पाई गई।

2. **सामाजिक दृष्टिकोण :** समाज के दृष्टिकोण के प्रति संवेदनशीलता पर 60 प्रतिशत 'पूर्णत: सहमत' और 20 प्रतिशत 'सहमती' प्राप्त हुई।

3. **सामाजिक गतिविधियाँ :** सामाजिक गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करना जिम्मेदारी न मानने के कथन पर 57 प्रतिशत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की 'पूर्णत सहमत' पाई गई।

4. **सामाजिक समस्याओं पर चर्चा :** सामाजिक समस्याओं पर चर्चा करने को समय की बबार्दी मानने पर 72 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की राय 'पूर्णत: सहमत' के पक्ष मे रही।

5. **जाति या धर्म पर भेदभाव :** 'मै जाति या धर्म के आधार पर भेद-भाव नहीं करता' के मानवीय और संवैधानिक मूल्य पर 82 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

6. **आस- पड़ोस की घटनाएँ :** आस - पड़ोस की घटनाओं के प्रति सचेत रहने पर 52 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

7. **सामाजिक परिवर्तन के माध्यम :** अध्यापक को सामजिक परिवर्तन का माध्यम मानने पर 78 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

8. **सामाजिक उत्थान :** सामाजिक उत्थान को केवल सामाजिक कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी मानने पर अधिकांश 60 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'सहमत' पाए गए।

9. **शिक्षक बनाम अन्य व्यवसाय :** अन्य व्यवसायों को समाज के लिए अधिक महत्वपूर्ण मानने पर 52 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

(स) स्वयं के व्यवसाय के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता :

1. **व्यावसायिक कार्यो को प्राथमिकता :** अपने कार्यो को हार्दिक प्राथमिकता देने के पक्ष मे 48 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

2. **प्रारंभिक अवस्था में रूचि :** शिक्षण व्यवसाय केवल शुरूआत में रूचिकर लगने की बात पर 36 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

3. **व्यवसाय की आलोचना पर तनाव :** व्यवसाय को बुरा भला कहे जाने पर 60 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' होकर तनावग्रस्त होने की बात स्वीकार की गई।

4. **अवकाश काल में कार्य :** छुट्टी के दिनों में कार्य के लिए तत्पर रहने पर 57 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

5. **कार्य अति भार :** नौकरी को थकान भरी मानने के संदर्भ में अधिकांश 52 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'असहमत' पाए गए।

6. **संसाधनों का अभाव :** आवश्यक संसाधनों के बिना कार्य करना नापसंद होने पर 52 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

7. **अधिक वेतन पर व्यवसाय परिवर्तन :** अधिक वेतन मिलने पर व्यवसाय बदलने में संकोच ने होने की बात पर 52 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

8. **लाभ की अपेक्षा हानियाँ :** इस नकारात्मक सोच से अधिकांश 54 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'असहमत' पाए गए।

9. **कर्तव्यबद्ध रहने मे कठिनाई :** वर्तमान परिस्थितियों में कर्तव्यबद्ध रहने को कठिन मानने पर अधिकाश 57 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'असहमत' पाए गए।

(द) उत्कृष्टता प्राप्त करने के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता :

1. **सेमीनार/सभाओं में भागीदारी :** इसे समय की बबार्दी मानने से अधिकांश 56 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'असहमत' पाए गए।

2. **उत्कृष्टता एक निरंतर यात्रा :** उत्कृष्टता की प्राप्ति को कभी न समाप्त होने वाली यात्रा मानने पर 62 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

3. **निरंतर सीखने की आवश्यकता :** शिक्षण में निरंतर सीखने की अनिवार्यता पर 89 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

4. **शैक्षणिक पत्र-पत्रिकाएँ :** पढ़ने के लिए समय न बचने की समस्या पर 42 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

5. **तौर तरीकों में कमी का अनुभव :** अपने तौर तरीकों में कोई कमी न महसूस न होने पर 38 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

6. **पुरातन बनाम आधुनिक पद्धतियों :** पुरानी पद्धतियों को बेहतर मानने न होने पर 26 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत'

एवं 25 प्रतिशत 'सहमत' पाए गए।

7. शिक्षण और आलस्य : शिक्षण व्यवसाय लोगों को आलसी बनाता है, इस बात से अधिकांश 58प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'असहमत' पाए गए।

8. कमियों के प्रति समालोचनात्मक सचेत : अपनी कमियों के प्रतिसजग रहने पर 36 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

9. उत्कृष्टता का सीमित क्षेत्र : शिक्षण में उत्कृष्टता का क्षेत्र सीमित होने के विचार पर 56 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

(ज) मानवीय मूल्यों के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता :

1. नैतिक मूल्यों पर मुखरता: दूसरों की उपस्थिति में भी नैतिक मूल्यों पर विचार मुखरता से रखने पर 36 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

2. ट्यूशनप्रथा : जीवन स्तर सुधारने के लिए ट्यूशन लेने से परहेज ने होने पर 39 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' एवं 33 प्रतिशत 'असहमत' पाए गए।

3. नैतिक विद्यार्थियों की प्रशंसा: नैतिक मूल्यों का पालन करने वाले विद्यार्थियों की प्रशंसा करने पर 44 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

4. अभद्र भाषा पर रोष : लोगों द्वारा अभद्र भाषा के प्रयोग पर रोष प्रकट करने के संबंध में 88 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

5. आदर्श बनने की प्रतिबद्धता : विद्यार्थियों के लिए आदर्श बनने की कर्तव्यबद्धता पर 87 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

6. ईमानदारी का स्तर : किसी भी परिस्थिति में ईमानदारी बनाए रखने के उच्च मूल्य पर 88 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

7. राष्ट्र के नैतिक मानक : अध्यापक द्वारा राष्ट्र के नैतिक मानक कदाचित ही निर्धारित होने के कथन पर 33 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने ' असहमत' पाए गए।

8. विद्यार्थियों के अभद्र व्यवहार पर शर्म : छात्रों के गलत व्यवहार पर स्वयं शर्म महसूस करने के संदर्भ में अधिकांश 28 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने ' असहमत' पाए गए।

9. व्यावसायिक अवमूल्यों का पालन : व्यावसायिक आचार संहिता का पालन करने पर समाज में आदर मिलने के विश्वास पर 80 प्रतिशत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने 'पूर्णत: सहमत' पाए गए।

शैक्षिक निहितार्थ – उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक प्रतिबद्धता शिक्षण–अधिगम की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है, अत: शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नवीन शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन कौशल, सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग तथा विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण पर विशेष बल दिया जाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, यह निहितार्थ उभरता है कि यदि शिक्षकों को अनुकूल कार्य वातावरण, पर्याप्त शैक्षिक संसाधन तथा प्रशासनिक सहयोग प्राप्त हो, तो उनकी प्रतिबद्धता में वृद्धि होती है और शिक्षण संबंधी समस्याएँ स्वत: कम होती हैं।

शिक्षकों के लिये:

1 व्यावसायिक प्रतिबद्धता के अंतर्गत शिक्षकों को अपने पेशे के प्रति निष्ठा, उत्तरदायित्व–बोध तथा नैतिक मूल्यों का पालन करना आवश्यक है।

2. नवीन शिक्षण विधियों, गतिविधि–आधारित शिक्षण तथा सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी के प्रयोग से शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार संभव है।

सुझाव :

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन छोटे न्यादर्श पर किया है अत: बड़े न्यादर्श पर भी किया जा सकता था।
2. शिक्षकों के कार्य कौशल विकास में प्रतिबद्धता अपने आप में जटिल समस्याओं को हल करने में सहायक होती है अत: कला एवं विज्ञान के शिक्षक विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए परिक्षा परिणाम उच्च देते है।
3. व्यावसायिक प्रतिबद्धता में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य तकनिकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य शिक्षा में भी शिक्षकों का योगदान महत्वपुर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कुलश्रेष्ठ, एम. पी. (2005), शिक्षा मनोविज्ञान आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
2. भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, मीनाक्षी (2005); 'मापन में सांख्यिकी'; विनय रखेजा, मेरठ।
3. कौल लोकेश (2005), शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, मेरठ, आर. लाल. बुक डिपो।
4. शर्मा, आर. ए (2006)., शिक्षा अनुसंधान आर.लाल बुक डिपो मेरठ।
5. मीणा, ललिता कुमारी (2012), 'माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन', पीएचडी शिक्षाशास्त्र रिजनल इस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, मैसूर।
6. राज तिलक (2012), 'माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन'।
7. अर्चना (2020), 'शिक्षण प्रभावोत्पादकता एवं कक्षा–कक्ष अशाब्दिक सम्प्रेषण के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन',अनपब्लिशड डॉक्टोरल थिसिस, भोपाल यूनिवर्सिटी।
8. गंगवार (2020), 'वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत् प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण अभिवृत्ति एवं दायित्वबोध के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन', अप्रकाशित लघु शोध अध्ययन भुवनेश्वर विश्वविद्यालय।

****